प्रस्तावना :–

"चरथ भिक्खवे चारिकं, बहुजन हिताय,बहुजन सुखाय,लोकानुकंपाय,अत्थाय

हिताय सुखाय देवमनुस्सानं देसेथ भिक्खवे, धम्मं आदिकल्याण,मज्झे कल्याण,

परियोसानकल्याण सात्थं सव्यज्जनं केवल परिपुण्ण, परीसुद्ध ब्रह्मचरियं पकासेथ"

भगवान बुद्ध ने अपने जीवन के 45 वर्षों तक सम्पूर्ण जम्बुदीप में अथक धम्म देसना दिया और लोगों के कल्याण के लिए भिक्खुओं को उपरोक्त गाथा कहा वे लोगों को दुःखीं नहीं देख सकते थे। अपनी सम्पूर्ण साधना में दुःख के कारणों की खोज की, तथा बुद्धत्व प्राप्ति के लिए धम्ममार्ग दिया। असंख्य लोगों को अपने दुःखों से मुक्त कराया। साथ ही भिक्खुओं को यह उपदेश दिया कि बहुजनों के हित एवं कल्याण के लिए निरन्तर सभी दिशाओं में चरिका करते हुए लोगों को धम्म से परिचित होने का अवसर प्रदान करें।

भगवान बुद्ध के धम्म तत्व ज्ञान को संसार के अनेक देशों के राजाओं, सम्राटों और विद्वानों ने अपनाया है तथा उसे अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाकर बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार के लिए अनेकों ने अपना तन-मन-धन और सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है। यह एतिहासिक जानकारी हमें तीन स्रोतों से प्राप्त होता है। साहित्यिक, पुरातात्विक तथा यात्रा विवरण से। साहित्य में मुख्यत: पालि भाषा, संस्कृत, शंकर संस्कृत, सिंहली, चीनी, जापानी, तिब्बती, अंग्रेजी, आदि। पुरातात्विक अवशेषों में सम्राट अशोक के 84 हजार स्तूपों, शिलालेखों, अभिलेखो और बौद्ध विहार तथा चीनी यात्रियों के यात्रा विवरण से जानकारी मिलती है।

भगवान बुद्ध और सम्राट अशोक में दो सौ अठ्ठारह वर्ष का अन्तर मात्र है। सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका में धम्म कार्य के लिए भेजा था। वे अपने साथ बोधिवृक्ष, तिपिटक, अट्ठकथाएँ और बुद्धअस्थियाँ लेकर गये थे। भगवान बुद्ध के लगभग एक हजार से ग्यारह सौ वर्षों के बाद ब्राह्मी परम्परा के अनुसार बुद्धघोष का जन्म चौथी शताब्दी के अन्त व पाँचवी शताब्दी के आरम्भ में माना जाता है। बुद्धघोष भारतीय बौद्ध भिक्खु थे। और वह सिलोन गये। वहाँ उन्होंने सिंहलिभाषा सिखा क्योंकि सिलोन में पालि तिपिटक सिंहलीभाषा में सुरक्षित राजा 'वट्टगामिणी के शासन काल से रख गया था। यह सर्वविदित है कि भगवान बुद्ध के धम्मत्तव ज्ञान को भिक्खुओं ने सुन कर मौखिक रूप में याद रखा तथा दूसरी पीढ़ी के भिक्खुओं को याद कराया इस तरह श्रवण परंपरा के द्वारा धम्म अन्य पीढ़ियों तक पहुचा। राजाओं ने राज्य आश्रय दिया एवं संगीतियों के माध्यम से धम्मत्तव ज्ञान में हुए अशुद्धियों को दूर करते हुए, श्रीलंका में राजा वट्टगामिणी के शासनकाल में बुद्ध की शिक्षा को लिखित रूप प्रदान किया गया। जब इसे लिखित रूप मिला तब हम इसे बौद्धधर्म ग्रंथ के नाम से जाना गया। जिसे सम्पूर्ण विश्व के लोग तिपिटक के नाम से जानते है। यह तीन पिटक अर्थात् विनयपिटक यह विहार वासियों के लिए नियम या विनय।

सुत्तपिटक बुद्ध वचन, उपदेश या प्रवचनों का संग्रह और अभिधम्मपिटक यह विशेषधम्म या उन्नत तत्वज्ञान की बात है।

भगवान बुद्ध के शिक्षाओं एवं उनके अस्तित्व को ऐतिहासिक न मान कर पौराणिक माना जाता था। लेकिन रॉयल एशियाटिक सोसायटि कलकत्ता में ब्रिटिशों द्वारा सन् 1784 ईसवी में स्थापित हुई। ब्रिटिश लोग पुरातात्वीक एवं उत्खन्न प्रेमी थे इसलिए अपना सारा जीवन खंडहरो में बीता दिया जैसे- मिस्सटर एण्ड मिसेस रिस डेविड। सर अलेक्जेंडर कनिंघम के सह कर्मी जेम्स प्रिंसेप ने गौढ़ एवं मूढ़ समझी जाने वाली लिपि को पढ़ने का वैज्ञानिक तरिका खोज निकाला और पहला शब्द 'दानं' पढ़ा यह लिपि धम्मलिपि या ब्राह्मी लिपि थी। सम्राट अशोक ने चौरासी हजार बौद्ध स्तुप बनवाए थे। इन स्तुपों में से सबसे महत्वपूर्ण लुम्बिनी स्तंभ लेख क्योंकि इस पर लिखा हुआ शब्द 'हिद बुधे जाते साक्यमुनीति' 'यहाँ शाक्यमुनी बुद्ध का जन्म हुआ' इस बात को प्रमाणित करता है। कि भगवान बुद्ध पौराणिक नहीं बल्की ऐतिहासिक पुरूष है। और उनकी धम्म मार्ग बुद्धत्व प्राप्ति का मार्ग है। जिस पर चल कर भिक्खु और भिखुणियाँ अरहत फल प्राप्त किय निर्वाण सुख का लाभ लिया।

महाबोधि सभा के मासिक जनरल "महाबोधि" के अप्रैल-मई सन् 1950 के अंक में बाबा साहब डॉ॰ अंबेडकर के "द बुद्ध एंड द फ़्युचर ऑफ हिज रिलीजन" (भगवान बुद्ध एवं उनके धम्म का भविष्य) पर लेख को पढ़कर भंते संघरक्षित प्रभावित हुये और उनके संपर्क में आने का निश्चय किया और तीन मुलाक़ात किये। पहली बार दादर में उनके निवास स्थान राजगृह में हुई, दूसरी बार मुंबई तथा तीसरी मुलाक़ात नागपुर में हुई थी। और भंते संघरक्षित ने सन् 1967 में "फ्रेंड्स ऑफ द वेस्टर्न्स बुद्धिस्ट ऑर्डर" की स्थापना इंग्लैण्ड में किये। और योगा सीखने की खोज में (Jeremy Goody) जेरेमी गुड़ी (लोकमित्र जी) का मुलाक़ात भंते संघरक्षित से हुयी।

जनवरी सन् 1974 में उनकी धम्मचारी दिक्षा हुई और उन्हें धम्मचारी लोकमित्र यह नाम दिया गया। सन् 1975 में वो Fri. W. B. O. के North Landan Buddhist Center के Chairman बने। सन् 1977 में उन्होंने भारत देश को भेंट दी बाबा साहब डॉ भीम रॉव अंबेडकर ने धम्मक्रांति 14 ऑक्टूबर सन् 1956 को दीक्षा भूमि नागपुर में अपने लगभग 5 लाख अनुयाइयों को धम्म दीक्षा दे कर भारत देश में बौद्ध धम्म का पुनर्जागरण किया। इसी धम्मक्रांति के 21 वीं वर्षगाठ पर धम्मचारी लोकमित्र भारत देश में योगा और बौद्ध स्थलो के दर्शन के लिए आये थे। उसी समय "अशोक विजया दशमी" के दिन नागपुर पाहुचे और वहाँ पर उन्होंने बाबा साहब के नाम के जयघोष करते जनसैलब को देखा और यह देखकर प्रभावित हुए।

सन् 1978 अगस्त में वे दोबारा भारत आये। धम्मचारी लोकमित्र जी का प्रतिज्ञाबद्धता और अपने कार्यो के प्रति निष्ठा ईमानदारी से उसे करने का लगन स्वयं पर विशवास चाहे कोई भी परिस्थिति हो कितनी भी कठिन विपप्ति सामने आये उसे सामना करने का साहस है। दलित शोषितों के उद्धारक डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर द्वारा लिखे गए विचारो को न सिर्फ गहराई से अध्ययन किया बल्कि उतनी ही सूक्ष्मता से सच्चे अर्थो में मिशन शिक्षित, संगठित,

संघर्ष को समझा और उसे अपने आचरण में उतारने के लिए हर कोसिस भी किए इंग्लैण्ड विश्व में प्रतीष्ठित शहर है वहाँ के एक जाने-माने एनथ्रोपोलोगी के प्रोफेसर के एकलौते संतान है और उन्होंने सम्मान और आदर पूर्वक आरामदायक जीवन व्यतित किया है इसके बाद भी जब वे भारत देश में बाबासाहब के मिशन को अपने जीवन में उतारने के लिए (क्योकि जहाँ जाति और अस्पृस्यता नहीं है वाहा के लोगों को यह सिर्फ शब्द ही लगते है)उन्होने धन,धरती,सत्ता, ज्ञान-विज्ञान,सभयता-संस्कृति,शिक्षा,संपति,शस्त्र से वंचित हुए समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े दलित शोषित पीड़ित हर तरफ से दमन के सिकार हुए लोगों की पीड़ा को लोकमित्र अपने अनुभव में नहीं ले पा रहे थे क्योकि वे एक अमीर और प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लिया है इसलिए एक अछूत कहे जाने, बार-बार हर जगह अपमानित होने हर क्षेत्र के सभी सुविधाओ से वंचित होने वाले दलित लड़की से उन्होंने विवाह किया ताकि वे इस जीवन को अनुभव भी कर सके।

किसी के दुख को अनुभव करने के लिए उसे अपने जीवन का अंग बना लेना यह सिर्फ एक असाधारण व्यक्ति ही कर सकता है दलितो की पीड़ा को अनुभव भी कर बाबा साहब के मिशन को अपने जीवन का लक्ष बना लिया है। और यहाँ बौद्ध धम्म के तत्व ज्ञान को बाबा साहब के अनुयाइयों के बीच प्रचार-प्रसार और धम्म अभ्यास का कार्य करने हेतु उन्होने सन् 1979 जून में "त्रिरत्न बौद्धा महासंघ" की स्थापना की और वे इस संघ के अध्ययक्ष है और पूरे भारत में यह संघ फैला हुआ है इसके पश्चात इन्होंने जंबुदीप ,माणुसकी और नागलोक का निर्माण किया। नागलोक के माध्यम से वे सन् 1995 से कार्य कर रहे है और उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन "प्रबुद्ध भारत" के निर्माण हेतु समर्पित किया है लोकमित्र जी पिछले 39/40 वर्षो से कार्यरत है।